डायरी का एक पन्ना

कक्षा - दसवीं

विषय – हिंदी
पाठ : 2
पाठ का नाम : डायरी का एक पन्ना
PPT-3

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

(सभा को रोकने के लिए किये गए प्रयासों का वर्णन)

जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की सबके लिए ओपन लड़ाई थी। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाल दिया था कि अमुक - अमुक धारा के अनुसार कोई भी, कही भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं। जो लोग काम करने वाले थे उन सभी को इंस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी अगर उन्होंने किसी भी तरह से सभा में भाग लिया तो वे दोषी समझे जायेंगे।इधर परिषद् की ओर से नोटिस निकाला गया था कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर स्मारक के नीचे झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सभी लोगों को उपस्थित रहने के लिए कहा गया था। प्रशासन को इस तरह से खुली चुनौती दे कर कभी पहले इस तरह की कोई सभा नहीं हुई थी।

ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाष बाबू जुलूस ले कर आए। उनको चौरंगी पर ही रोका गया ,पर भीड की अधिकता के कारण पुलिस जुलूस को नहीं रोक सकी। मैदान के मोड पर पहुँचते ही पुलिस ने लाठियाँ चलना शुरू कर दी ,बहत लोग घायल हए ,सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पड़ी। सुभाष बाबू बहत ज़ोर से वन्दे -मातरम् बोल रहे थे। ज्योतिर्मय गांगुली ने सुभाष बाबू से कहा ,आप इधर आ जाइए। पर सुभाष बाबू ने कहा आगे बढना है।

चौरंगी - कलकत्ता शहर में एक जगह का नाम

ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाष बाबू अपना जुलूस ले कर मैदान की ओर निकले। उनको चौरंगी पर ही रोक दिया गया। परन्तु वहां पर लोगो की भीड़ इतनी अधिक थी कि पुलिस उनको वहां पर न रोक सकी। जब वे लोग मैदान के मोड़ पर पहुंचे तो पुलिस ने उनको रोकने के लिए लाठियां चलाना शुरू कर दिया। बहुत से लोग घायल हो गए। सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पडी। परन्तु फिर भी सुभाष बाबू बहुत ज़ोर से वन्दे -मातरम बोलते जा रहे थे। ज्योतिर्मय गांगुली ने सुभाष बाबू से कहा कि वे इधर आ जाए। परन्तु सुभाष बाबू ने कहा कि उन्हें आगे बढ़ना है।
यह सब तो अपने सुनी हई लिख रहे हैं पर सुभाष बाबू का और अपना विशेष फासला नहीं था। सुभाष बाबू बडे जोर से वन्दे -मातरम बोलते थे,यह अपनी आँख से देखा। पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी। क्षितिज चटर्जी का फटा हुआ सिर देखकर तथा उसका बहता हुआ खुन देखकर आँख मिंच जाती थी इधर यह हालत हो रही थी कि उधर स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढियों पर चढ झंडा फहरा रही थी और घोषणा पढ रही थी। स्त्रियाँ बहत बड़ी संख्या में पहुँच गई थी। प्रायः सबके पास झंडा था। जो वालेंटियर गए थे वे अपने स्थान से लाठियाँ पड़ने पर भी हटते नहीं थे।

वालेंटियर - स्वयंसेवी

लेखक कहते हैं कि बहुत सी बातें तो वे सुनी-सुनाई लिख रहे हैं परन्तु सुभाष बाबू और लेखक के बीच कोई ज्यादा फासला नहीं था। सुभाष बाबू बहुत जोर -जोर से वन्दे - मातरम बोल रहे थे, ये लेखक ने खुद अपनी आँखों से देखा था। पुलिस बहुत भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी। क्षितिज चटर्जी का सिर पुलिस की लाठियों के कारण फट गया था और उनका बहता हुआ खून देख कर आँखे अपने आप बंद हो जाती थी। इस तरह का माहौल था और दूसरी तरफ स्मारक के नीचे सीढ़ियों पर स्त्रियां झंडा फहरा रही थी और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ रही थी। स्त्रियाँ बहुत अधिक संख्या में आई हुई थी। लगभग सभी के पास झंडा था। जो स्वयंसेवी आए थे वे अपनी जगह से पुलिस की लाठियाँ पड़ने पर भी नहीं हट रहे थे।

सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठा कर लाल बाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही स्त्रियां जुलूस बना कर वहाँ से चलीं। साथ ही बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई। बीच में पुलिस कुछ ठंडी पड़ी थी ,उसने फिर डंडे चलने शुरू कर दिए। अबकी बार भीड़ ज्यादा होने के कारण ज्यादा आदमी घायल हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस टूट गया और करीब 50 -60 स्त्रियाँ वहीं मोड़ पर बैठ गई। पुलिस ने उन्हें पकड़कर लाल बाजार भेज दिया। स्त्रियों का एक भाग आगे बड़ा ,जिनका नेतृत्व विमल प्रतिभा कर रही थी। उनको बहू बाजार के मोड़ पर रोका गया और वे वही मोड़ पर बैठ गई। आसपास बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई। जिस पर पुलिस बीच - बीच में लाठी चलती थी।

(यहाँ पर लेखक स्त्रियों की बहादुरी का वर्णन कर रहा है)
सुभाष बाबू को भी पकड लिया गया और गाडी में बैठा कर लाल बाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ वहाँ से जन समूह बना कर आगे बढने लगी। उनके साथ बहत बड़ी भीड भी इकट्ठी हो गई। कुछ समय के लिए लगा की पुलिस ठंडी पड गई है अब लाठी नहीं बरसाएगी परन्त पुलिस बीच-बीच में लाठियाँ चलाना शुरू कर देती थी। इस बार भीड ज्यादा थी तो आदमी भी ज्यादा जख्मी हुए। धर्मतल्ले के मोड पर आते-आते जुलूस टूट गया और लगभग 50 से 60 स्त्रियाँ वही मोड पर बैठ गई। उनके आसपास बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी। जिन पर पुलिस बीच -बीच में लाठियाँ चलाया करती थी।
इस प्रकार करीब पौने घंटे के बाद पुलिस की लॉरी आई और उनको लाल बाज़ार ले जाया गया। और भी कई आदमियों को पकडा गया। वजलाल गोयनका जो कई दिन से अपने साथ काम कर रहा था और दमदम जेल में भी अपने साथ था ,पकडा गया। पहले तो वह डंडा लेकर वन्दे -मातरम बोलता हुआ मोनूमेंट की और इतनी जोर से दौडा कि अपने आप ही गिर पडा और उसे एक अंग्रेजी घुडसवार ने लाठी मारी फिर पकड कर कुछ दूर ले जाने के बाद छोड दिया। इस पर वह स्त्रियों के जुलूस में शामिल हो गया और वह पर भी उसको छोड़ दिया। तब वह दो सौ आदमियों का जुलूस बनाकर लाल बाज़ार गया और वहां पर गिरफ्तार हो गया।

इस बार पुलिस की लॉरी करीब पौने घंटे बाद आई और उन स्त्रियों को लाल बाज़ार ले जाया गया और भी कई आदमियों को गिरफ्तार किया गया। वृजलाल गोयनका जो कई दिनों से लेखक के साथ काम कर रहा था और दमदम जेल में भी लेखक के साथ ही था, वह भी पकड़ा गया। पहले तो वह खुद ही झंडा लेकर वन्दे-मातरम बोलता हुआ स्मारक की ओर इतनी तेज़ी के साथ दौड़ा की खुद ही गिर गया और इस पर एक अंग्रेज घुड़सवार ने उसे लाठी मारी और फिर पकड़ लिया, कुछ दूर तक ले जा कर फिर उसे छोड़ दिया। इसके बाद वह स्त्रियों के जुलूस में शामिल हो गया ,वहाँ पर भी पकड़ा गया परन्तु वहाँ भी उसे छोड़ दिया गया। इस पर भी वो नहीं माना और दो सौ लोगों के जुलूस के साथ लाल बाज़ार पहुंच गया और वह गिरफ्तार हो गया।

मदालसा भी पकड़ी गई थी। उससे मालूम हुआ कि उसको थाने में भी मारा था। सब मिलाकर 105 स्त्रियाँ पकड़ी गयी थी। बाद में रात को नौ बजे सबको छोड़ दिया गया। कलकत्ता में आज तक इतनी स्त्रियाँ एक साथ गिरफ्तार नहीं की गई थी। करीब आठ बजे खादी भण्डार आए तो कांग्रेस ऑफिस से फ़ोन आया कि यहाँ बहत आदमी चोट खा कर आये हैं और कई की हालत संगीन है उनके लिए गाडी चाहिए। जानकी देवी के साथ वहां गए ,बहत लोगों को चोट लगी हई थी। डॉक्टर दासगप्ता उनकी देखरेख और फ़ोटो उतरवा रहे थे। उस समय तक 67 लोग वहाँ आ चके थे। बाद में तो 103 तक आ पहुंचे।

संगीन - बहुत गंभीर

मदालसा जो जानकी देवी और जमना लाल बजाज की पुत्री थी ,उसे भी गिरफ़्तार किया गया था। उसे बाद में मालूम हुआ कि उसको थाने में भी मारा गया था। सब मिलाकर 105 स्त्रियों को गिरफ्तार किया गया था। बाद में रात नौ बजे सबको छोड़ दिया गया था। कलकत्ता में इस से पहले इतनी स्त्रियों को एक साथ कभी गिरफ़्तार नहीं किया गया था। करीब आठ बजे खादी भंडार आए तो वहाँ कांग्रेस ऑफिस से फ़ोन आया की वहाँ पर बहुत सारे आदमी चोट खा कर आये हैं। और कई की हालत तो बहुत गंभीर बता रहे थे। उनके लिए गाड़ी मँगवा रहे थे।लेखक और अन्य स्वयंसेवी जानकी देवी के साथ वहाँ गए तो देखा बहुत लोगों को चोट लगी हुई थी। डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देखरेख कर रहे थे और उनके फोटो खिंचवा रहे थे। उस समय तो 67 आदमी वहाँ थे परन्तु बाद में 103 तक पहुँच गए थे।

अस्पताल गए, लोगों को देखने से मालूम हुआ कि 160 आदमी तो अस्पतालों में पहुंचे और जो लोग घरों में चले गए ,वो अलग हैं। इस प्रकार दो सौ घायल जरूर हुए है। पकड़े गए आदमियों की संख्या का पता नहीं चला। पर लाल बाजार के लॉकअप में स्त्रियों की संख्या 105 थी। आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है। वह आज बहुत अंश में धूल गया और लोग सोचने लग गए कि यहाँ भी बहुत सा काम हो सकता है।

जब लेखक और अन्य स्वयंसेवी अस्पताल गए, तो लोगो को देखने से मालूम हआ कि 160 आदमी तो अस्पतालों में पहुंचे थे और जो घरों में चले गए उनकी गिनती अलग है। इस तरह लेखक और अन्य स्वयंसेवी कह सकते हैं कि दो सौ आदमी जरूर घायल हए। पकडे गए आदमियों की संख्या का पता नहीं चल सका। पर इतना जरूर पता चला की लाल बाज़ार के लॉकअप में स्त्रियों की संख्या 105 थी। इतना सब कुछ पहले कभी नहीं हआ था ,लोगों का ऐसा प्रचंड रूप पहले किसी ने नहीं देखा था। बंगाल या कलकत्ता के नाम पर कलंक था की यहाँ स्वतंत्रता का कोई काम नहीं हो रहा है। आज ये कलंक काफी हद तक धूल गया और लोग ये सोचने लगे कि यहाँ पर भी स्वतंत्रता के विषय में काम किया जा सकता है।

प्रश्नोत्तर का मौखिक अभ्यास करके आओ ।

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP